अग्रोहा की रीत एक मुद्रा व एक ईंट

महाराजा अग्रसेन व अग्रोहा राज्य के विषय में अनेक कथाएं व किवदंतियों प्रचलित हैं, किन्तु उसमें एक मुद्रा एक ईंट की किंवदंती सार्वधिक लोकप्रिय हैं इसके अनुसार वैभव की अवस्था में आग्रोहा में एक लाख घरों की आबादी थी। ये सब लोग अत्यंत समृद्धशाली संगठन प्रेमी और समाज हितैषी थे। जब भी वहां कोई नवीन बंधु बसने के लिए आता था तो वहां का प्रत्येक परिवार उसे एक मुद्रा और एक ईंट सम्मान स्वरूप भेंट करता था, जिससे वह तत्काल एक लाख मुद्राओं का स्वामी बन जाता और लाख ईंटो से इसका मकान बन जाता था। एक लाख रूपयों से वह अपना व्यवसाय–व्यापार चला लेता, जिससे वहां किसी प्रकार की बेकारी, बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न न होती थी। यह परम्परा किसी कारण वश व्यापार में घाटा लगने अथवा प्राकृतिक आपदा के आने पर भी दोहराई जाती थी। इस परम्परा का पालन समानता के आधार पर नवागंतुक को भी करना पड़ता था और उसे भी नए बसने वाले परिवार को एक ईंट व एक रुपया देना पड़ता था। इस प्रकार पारस्परिक सहयोग व समानता की भावना पर आधारित होने के कारण इससे किसी प्रकार की हीनता या छोटे – बड़े की भावना पैदा नहीं होती थी। सभी दाता थे और सभी समान रूप से ग्रहणकर्ता।

हो सकता है कि इस किंवदंती में कुछ अतिश्योक्ति भी रही हो किन्तु इससे यह तो स्पष्ट ही है कि उस समय अग्रवाल समाज अपने वैभव के जितने चरम शिखर पर था, उतनी ही उसकी उदारता, दानशीलता, धार्मिकता और सामाजिक सहयोग एवं एकत्व अनुभूति की भावना बढ़ी हुई थी। इसी सहयोग सहानुभूति एवं सबके सुख में अपना सुख देखने की व्यापक भावना तथा उदार दृष्टिकोण के कारण वे अग्रोहा में बसने वाले प्रत्येक परिवार को थोड़ी – थोड़ी सहायता देकर उसे आत्मनिर्भर बना देते थे, जिससे वह अपना स्वतंत्र, सम्मानित, आत्मस्वाभिमानपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके।

बिना रक्त की एक बूंद बहाएं समाज में समानता लाने तथा वैभव को बांटने का यह प्रयत्न इतिहास में अनुपम है। 'एक सबके लिए – सब एक के लिए', 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' पर आधारित ऐसा आदर्श दुर्लभ है।

महाराज अग्रसेन द्वारा पालनीय नियम

- ❖ वास्तविक सुख एवं आत्मिक शांति के लिए सत्य, अहिंसा, व दयायुक्त पवित्र जीवन – यापन सद्भावों का अधिकाधिक प्रसार। वाणिज्य व्यवसाय द्वारा सबकी समृद्धि का प्रयत्न।
- ❖ व्यक्तिगत आवश्यकताओं को कम करते हुए विश्व हिताय कार्य करना। संकुचित स्वार्थ का परमार्थ में विलीनीकरण ।
- ❖ भारतीय वेशभूषा, आहार और निष्कपट व्यवहार, ईमानदारी एवं सपरिश्रम से अर्जित विशुद्ध कमाई का ही उपभोग, आवश्कताओं का संतुलन व आय की अपेक्षा व्यय में कमी।

- ❖ दुर्गुणों और दुर्व्यसनों का त्याग, भूखों को भोजन, रोगियों की चिकित्सा, दलितों की सहायता द्वारा उनकी उन्नति का प्रयत्न। स्वजीवन को निरंतर भलाई के कार्यों में प्रयोग क्योंकि सद्कर्म ही व्यक्ति की सबसे बड़ी धरोहर है।
- ❖ आर्थिक दृष्टि से कमजोर बंधुओं को सहायता देकर अपने समान बनाना और धन का सदुपयोग।
- ❖ सनातन हिंदू धर्म, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के आदर्शों का पालन।
- ❖ गौ को माता समझते हुए गोसंवर्धन तथा रक्षण हेतू प्रयत्न।
- ❖ अपनी सम्पत्ति को चार भागों में बांट कर पहला भाग गो – पालन, दान आदि में, दूसरा भाग व्यापार में, तीसरा भाग गृहस्थी के खर्चे में और चौथा भाग संचित करके रखें।
- ❖ अपने देश, जाति और समाज के लिए सर्वस्व समर्पण की भावना।

आप एवं आपके परिवार के लिए जानने योग्य महत्वपूर्ण बातें

दूसरे की वस्तु

जो मनुष्य अमावस्या को दूसरे का अन्न खाता है, उसका महीने भर का किया हुआ पुण्य (अन्नदाता) को मिल जाता है। अयनारंभ के दिन दूसरे का अन्न खाऐ तो छह महीनो का और विषुव काल (जब सूर्य मेष अथवा तुला राशि पर आए) में दूसरे का अन्न खाने से तीन महीनों का पुण्य चला जाता है। चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण के अवसर पर दूसरे का अन्न खाएं तो बारह वर्षों से एकत्र किया हुआ सब पुण्य नष्ट हो जाता है। संक्रांति के दिन दूसरे का अन्न खाने से महीने भर से अधिक समय का पुण्य चला जाता है। (स्कंदपुराण–207/11–13)

महाराजा अग्रसेन ने अपने अग्रोहा राज्य में एक ईंट – एक रुपया जैसी अनोखी व्यवस्था को जन्म दिया। अग्र शिरोमणि महाराजा श्री अग्रसेन जी द्वारा एक रुपया, एक ईंट वाले इस समाजवादी सिद्धांत पर के पीछे यही सोच रही होगी की कोइ भी भाई अपने को असहाय या असमर्थ न समझे। मानव मात्र में समानता, पारस्परिक सहयोग, भाईचारा, करुणा, सहिष्णुता, प्रेम और अहिंसा बनी रहे। पर समय बदला, युग बदले, शासन बदले, विचार तथा परिस्थितियों के साथ – साथ अर्थ युग में हमारा स्वार्थ भी बदलता गया। हम अग्रबंधुओं की नियति में परिवर्तन आया और देखते ही देखते हमारे समाज में नाना तरह की बुराईयां और कुरीतियों ने आकर अपना आधिपत्य जमा लिया जैसा कि हम जानते हैं कि पतनोन्मुखी प्रवृत्तियां तो आंधी और तूफान की तरह गति पकड़ती हैं। हम भी विवाह शादियों में दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, सडकों पर नृत्य, मद्यपान जैसी बुराईयों से एक दूसरे को देखा देखी ग्रसित होते गए। इसके साथ ही समाज सुधार सम्बंधी प्रयत्न भी चलते रहे। हम मंच से खड़े होकर कुरीतियों को त्यागने का भाषण देते रहे पर कोई परिवर्तन आया हो ऐसा नहीं लगता, अपितु उनमें दिनों दिन बढ़ोत्तरी ही नजर आती है। अतः हमें सच्चे दिल से आत्म विश्लेषण करना है। अग्र विभूतियों के नेतृत्व से समाज में सुख – समृद्धि आ सकेगी।

इतिहास का यदि हम ध्यानपूर्वक अवलोकन करें तो दुनिया में सुख – शांति उसी अवधि में रही, जब जन – जन के मन में पवित्रता, हदय में उदारता और शरीर में परमार्थ परायणता का भाव बना रहता था और दूसरों की मदद करने को सदैव उतारु रहता था। जब – जब ये भाव समाप्त हुए मनःस्थिति विक्षुब्ध होती चली गई और अंतकरण तेजाबी तालाब में बदल गया। आज हमें सुख – शांति आनंद और

आत्मीयता मात्र उन परिवारों में जीवंत दिखाई देती है। जिनमें पवित्रता, उदारता, दान और सेवाभाव जैसे गुण व्यवहार में विद्यमान है। यदि हमे समाज को अच्छा और उत्तम बनाना हैं तो हमें ऐसे परिवारों से विभूतिवान व्यक्तियों का चयन एकत्र करना तथा उनका संगठन तैयार करना होगा, एक फौज तैयार करनी होगी, जो समाज में आई बुराईयों को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सके। विभूति अर्थात विशेष गुण क्षमता से सम्पन्न व्यक्तित्व। विभूतियां सामान्यजनों की भीड़ से अलग ही चमकती है। अपनी मौलिक सूझबूझ कार्यकुशलता एवं अपने विशेष क्षेत्र की गुंथियां सुलझाने में अनूठी दक्षता के कारण मित्र और शत्रु दोनों ही इनका लोहा मानते हैं। सफलता और प्रशंसा इनके आगे – पीछे फिरती है। विभूतिमान जिस दिशा में जुटते हैं, उसी में सफलता और उपलब्धियों का अंबार लगा देते हैं। समाज की प्रगति इन्हीं के बलबूते पर तीव्र गति पकड़ती है।

प्रेरक विभूतियां आगे आएं

वास्तव में सोंचे तो विभूतिमान व्यक्तित्व इंजन की तरह काम करते हैं और जन साधारण तो बस डिब्बों की तरह इनके पीछे लुढ़कते चले जाते है। विभूतिमान ही अपने क्षेत्र का नेतृत्व करते हैं और आम जनता तो इनका अनुसरण करती है। ऐसे व्यक्तित्व ही अपने तूफानी पराक्रम से सुधार का ऐसा प्रवाह उत्पन्न कर सकते है। जिससे प्रभावित होकर अनुयायी पत्तों और तिनकों की तरह अनायास ही पीछे चलने को बाध्य हो जाते हैं। किसी भी समाज की दशा उसकी विभूतियों की दिशा और दशा पर निर्भर करती है। यदि ये निष्क्रिय और सुस्त हैं तो समाज भी जड़ता और पिछड़ेपन की तंद्रा में होगा। यदि वे केवल अपने संकीर्ण एवं शोषण विध्वंस में लगी है तो समाज में असंतोष और कुरीतियां होना स्वाभाविक है। निष्क्रिय रूप से समाज का उत्थान और पतन विभूतियों की दिशा और दशा पर निर्भर करती है। यदि ये निष्क्रिय और सुस्त हैं तो समाज भी जड़ता और पिछड़ेपन की तंद्रा में होगा। यदि वे केवल अपने संकीर्ण एवं शोषण विध्वंस में लगी हैं तो समाज में असंतोष और कुरीतियां होना स्वाभाविक है। निष्कर्ष रूप में समाज का उत्थान और पतन विभूतियों की दिशा धारा पर निर्भर करता है।

अतः यदि हम समाज में ऐतिहासिक परिवर्तन चाहते है तो हमें इन विभूतियों को अस्त्र – शस्त्र की तरह प्रयुक्त करना तथा उन्हें आगे लाना होगा। बड़े कार्यों को करने के लिए साधन भी बड़े होने चाहिए। जहां पहाड़ों को समतल करना है तो डाइनामाइट का इस्तेमाल करना होगा। कारगिल जैसी कठिन मोर्चे के लिए मंजे हुऐ कुशल योद्धा चाहिए। बर्फ में फंसे यात्रियों को कुशल पर्वतरोही सहायता कर सकते है। बड़े पुल बांध या भवनों का निर्माण शिक्षित इंजीनियरों द्वारा ही किया जाता है। दलदल में फंसे हाथी को बलवान हाथी ही निकाल सकता है। महत्व बकरे और गधे का भी है पर उन पर हाथी वाली सवारी नहीं कसी जा सकती। सौ खरगौश भी एक चीते से दौड़े में आगे नहीं निकल सकते। सत्य यही है कि बड़े कमों के लिए बड़े साधन चाहिए। उसी प्रकार समाज की समस्याओं और बुराईयों का समाधान समर्थ विभूतिवान पुरुष ही कर सकते है।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट उन सभी विभूतियों से अह्मान कर रहा है कि आज हमारे पूर्वज महाराजा अग्रसेन के जिन सिद्धांतों आदर्शों को भूल बैठे हैं, उन्हें पूरा करने हेतू उबलते दूध की मलाई की तरह उफन कर ऊपर आएं और मोर्चे की अग्रिम पंक्ति में अपना पराक्रम दिखावें।

आप जानते हैं कि त्रेता युग में रावण के असुरी आतंक को मिटाने में रीछ, वानरों, गिद्ध, गिलहरी का भी योगदान रहा पर समुद्र लांघने, उसे पाटने, रावण को चुनौती देने जैसे बड़े काम हनुमान, अंगद, नल, नील जैसी विभूतियों ने निभाए। द्वापर में दुर्योधन के कुशासन का अंत योगेश्वर श्रीकृष्ण, अर्जुन, भीम सरीखी हस्तियों ने ही किया। देश के स्वतंत्रता संग्राम में गांधी, सुभाष, पटेल, तिलक लाला लाजपतराय,

जमनालाल बजाज, राममनोहर लोहिया, मास्टर अमीरचंद्र जैसी विभूतियों का अग्रगामी नेतृत्व ही जनमानस को आंदोलित कर पाया था।

समस्त अग्रवंशियों, संस्थाओ, संगठनों के पदाधिकारियों से अनुरोध है कि समाज के व्यापक हित में यह मेरा है, यह पराया है, इस प्रकार की भावना त्याग सृजन की दिशा में कदम बढ़ाए और समाज सुधार, उसके नव निर्माण आंदोलन में भागीदार बनें। समाज के जिन बंधुओं में भी यह क्षमता है, जो समाज को नेतृत्व दे सकते हैं, वे यदि गहन आत्म समीक्षा में प्रवृत्त होते हैं तो वे स्वयं अनुभव करेंगे कि समाज के लिए समर्पित भाव से कार्य करने एवं महाराजा अग्रसेन के चरणों में नतमस्तक होकर उनके सिद्धांतो को आगे बढ़ाने में ही उनके जीवन की उपयोगिता और सार्थकता है। क्योंकि विभूतियां वास्तव में ईश्वरीय अनुदान, है, जो समाज रूपी उद्यान को सुगंधित और सुविकसित करने के लिए भगवान ने हमें प्रदान की है। अनेक बार देखने में आया है कि भगवान जिन्हें विभूतियों के रूप में सौभाग्य देता है, उनके साथ दुर्भाग्य भी जोड़ देता है। संपदा अपने साथ मद भी लाती है। जैसे शराब पीकर मनुष्य उन्मत हो जाता है, होश हवास खो बैठता है, क्या करना चाहिए, क्या नहीं, यह विवेक शक्ति खो देता है, बेढ़गी चाल चलने लगता है। यही हाल उन विभूतियों का होता है जो भगवान की कृपा का कारण नहीं समझ पाते और अपने गुणों को अपनी निजी संपत्ति समझ लेते है। अतः हर विभूतिमान ईश्वर प्रस्त योगी को शक्ति और सामर्थ्य का सदुपयोग करने में सजग रहें। तभी यश और संतोष प्राप्त करने का सौभाग्य मिल पाता है।

जिन अग्रबंधुओं में बुद्धि, प्रतिभा, विद्या, भावना, समर्थता, संगठन को मजबूत करने की कार्यकुशलता कुछ अधिक मात्रा में है, उन्हें इस रजत जयंती पर अपने आपको समाज निर्माण के इस पावन यज्ञ में अर्पित करने का निश्चय करना है। यह घाटे सौदा का नही हैं, निश्चित नफे का रहेगा हमारा सहयोग समाज रूपी बैंक में कई गुना ज्यादा ब्याज के साथ जमा होगा, अर्थात हमारे साथ परमार्थ के साथ स्वार्थ की सिद्धि भी होगी। यदि कोई भाई शासन तंत्र से जुड़ा है तो समाज की पहचान बनाने में साथ दें। धनाढ्यों, कलाकारो, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों ,विद्वानों अर्थात हर क्षेत्र में समाज को उनकी जरूरत है। यदि समाज की ये विभूतियां तहेदिल से समाज में फैली व्याप्त बुराईयों को मिटाने व व्याप्त कुंठाओं को दूर कर उसके नवनिर्माण का संकल्प ले लें तो समाज का अभिशाप दूर होते देर न लगेगी और समाज सबसे सिरमौर होगा। मेरी समझ में इससे बड़ा और पुण्य बुद्धिजीवियों के लिए कोई नहीं हैं और यही सबसे बड़ी उपलब्धि एवं श्रृद्धांजलि होगी, समाज तथा महाराजा अग्रसेन को।

परिवार के लिए जानने योग्य महत्वपूर्ण बातें	आप एवं आपके पूर्व की तरफ सिर करके सोने से विद्या प्राप्त होती है। दक्षिण की तरफ सिर करके सोने से धन तथा आयु की वृद्धि होती हैं। पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से प्रबल चिंता होती है। उत्तर की तरफ सिर करके सोने से हानि तथा मृत्यु होती है अर्थात् आयु क्षीण होती है। (भागवत भास्कर, अचार मयूख)